20वीं सदी की ग्रामीण जीवन की कहानियों में झूठे नेताओं की आलोचना

उल्फत मुखीबोवा

डॉ. खोदजायेवा नीलूफर

भारत में ग्रामीण जीवन सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है, क्योंकि अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। हालाँकि, सभी सरकारी संगठन ग्रामीण मुद्दों को गंभीरता से नहीं लेते हैं।

इसलिए, जिन लेखकों ने वहां विभिन्न सामाजिक समस्याओं को अपनी आंखों से देखा, उन्होंने इन मुद्दों की आलोचना की और अपनी रचनात्मकता के फलस्वरूप गांव के विषय को अपनी गद्य रचनाओं का मुख्य विषय बना लिया। उदाहरण के लिए, गिरिराज शरण और मधुकर सिंह ने "चुनी हुई कहानियाँ" शीर्षक से ग्रामीण जीवन पर कहानियाँ प्रकाशित की हैं। हम इन संग्रहों में ग्रामीण जीवन को समर्पित दो नकली नेताओं के विषय पर लिखी कहानियों के आधार पर इस समस्या का विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे।

'ग्राम्य जीवन की कहानियाँ' संग्रह में शामिल केशव दुबे की कहानी 'श्रमदान' सार्वजनिक निर्माण के कार्यों में से एक सड़क निर्माण के मुद्दे पर केंद्रित है।

इस कहानी के लेखक ने कुशलतापूर्वक तीन मुख्य मुद्दों को चित्रित किया है: अज्ञानी, निरक्षर ग्रामीण आबादी की सामाजिक स्थिति, बेरोजगारी का मुद्दा और झूठे नेता।

जैसा कि सर्वविदित है, शहरी और ग्रामीण विकास का मुख्यतः तात्पर्य निर्माण संबंधी समस्याओं के समाधान से है, जैसे पुरानी इमारतों को गिराकर नई इमारतें बनाना, सड़कों को चौड़ा करना और नयी सड़कें बनाना। इस कहानी में लेखक इसी समस्या को उठाता है।

भारत में ग्रामीण लोगों के जीवन की मुख्य समस्याओं में सुविधाओं की कमी,

Сканировано с CamScanner

बेरोजगारी और इन समस्याओं के प्रति उच्च एवं स्थानीय नेताओं का रवैया शामिल है। इस समस्या का विश्लेषण करने के लिए, इसी विषय पर आधारित कहानियों का चयन किया गया है।

कहानियों में शहर और गांव के मेयरों, गांव की तात्कालिक समस्याओं के प्रति उनके ठंडे रवैये, बेरोजगारी जैसे मुद्दों को सड़क निर्माण के माध्यम से उजागर किया गया है और उनकी आलोचना की गई है।

"श्रमदान" कहानी में, स्थानीय नेता एक गाँव में सड़क निर्माण का मुद्दा उठाते हैं। वे गाँव को शहर से जोड़ने वाली एक प्रमुख सड़क का निर्माण शुरू करते हैं।

इस काम को शुरू करने के लिए, वे निश्चित रूप से वरिष्ठ प्रबंधन के लिए एक कार्यक्रम तैयार करते हैं जिसमें निर्माण की आवश्यकता, इसके कार्यान्वयन के लिए एक विशेष योजना और आवश्यक धनराशि का उल्लेख करते हैं तथा उसे अग्रणी संगठनों के समक्ष प्रस्तुत करके अपने इस योजना को अनुमोदित करा लेते हैं। परिणामस्वरूप, सरकार निर्माण कार्यों पर खर्च की जाने वाली धनराशि आवंटित करती है तथा इस कार्य को पूरा करने के लिए एक निश्चित अवधि निर्धारित करती है। हालाँकि, यहीं पर नेताओं का काम समाप्त हो जाता है, अर्थात वे काम शुरू करने के लिए सभी आवश्यक कागजी कार्रवाई तैयार करने से नहीं कतराते हैं और जब तक उन्हें धन नहीं मिल जाता, तब तक सब कुछ ठीक चलता रहता है। लेकिन एक बार पैसा मिल जाने के बाद, जब उसे खर्च करने की बारी आती है, तो ज़्यादातर पैसा कहीं गायब हो जाता है। मानो सड़क निर्माण शुरू हो गया हो, तो वे ज़रूरतमंदों और बेरोज़गारों में से सस्ते मज़दूरों को मामूली तनख्वाह पर काम पर रख लेते हैं और नाम पर निर्माण कार्य शुरू कर देते हैं।

वे साल में एक या दो बार निर्माण स्थल पर चेक करने आते हैं फिर साल भर के काम का रिपोट भेज देते हैं। नतीजतन, बाहर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे निर्माण कार्य चल रहा है, लेकिन किसी का भी असली हालत के बारे में कोई दिलचस्पी नहीं है और न ही कोई पूछता है कि इसे बनाने में कितना समय लगेगा या यह पूरा होगा या नहीं। जब उच्च संगठन रिपोर्ट के लिए एक-एक करके निरीक्षण करना चाहते हैं, तभी स्थानीय नेता श्रमिकों को इकट्ठा करते हैं और ऐसी स्थिति पैदा करते हैं जैसे निर्माण कार्य चल रहा हो। नेताओं के चले जाने के बाद निर्माण का काम बिलकुल रुक जाता है। यही वह समस्या है जिसका लेखक ने कहानी में कुशलतापूर्वक वर्णन किया है।

कहानी में निर्माण कार्य शुरू करने वाले कनिष्ठ नेताओं में से एक के रूप में मुकर्रम का पात्र शामिल किया गया। कहानी पढ़ते हुए, हम उन लोगों के बयानों से देख सकते हैं

Сканировано с CamScanner

जो वर्षों से सड़क निर्माण कार्य में लगे हुए हैं, कि कोई एक नेता उनके काम की देखरेख कर रहा है और स्थानीय नेता मुकर्रम को इन पर्यवेक्षकों का स्वागत करने का काम सौंपा गया है।

दूसरी ओर, मुकर्रम अपने मातहतों पर नेताओं का स्वागत करने के लिए चिल्लाता है, मानो यह दिखाने की कोशिश कर रहा हो कि सड़क का निर्माण तेज़ी से हो रहा है। इस निर्माण कार्य में गन्नो उसका सहायक है और वह सारे छोटे-मोटे काम गन्नो को सौंप देता है:

"तुम लोग सब साली समझ लो और ठाँस लो अपने खोपड़े में ये मस्ती नई चलने की। आज वो तुम्हारे बाप लोग आएँगे आज। जिनके पेट में पीर उठने की छे, काम के टाइम वो साली अवई छुट्टी कर लो। समझी के नई? मुक़द्दम इतना कहकर हट गया था और बाकी समझाया था गन्ने को।"[1]

यह तथ्य कि सड़क निर्माण छोटे नेताओं के नाम पर चल रहा है और निर्माण अभी शुरू ही हुआ है, लेकिन वर्षों से कोई बदलाव नहीं हुआ है, दर्शाता है कि नेता फर्जी हैं। इस स्थिति का वर्णन कहानी में इस प्रकार किया गया है:

"गन्नो जो बहुत सारी नई मज़दूरों के बीच पुरानी थी। शायद यह सड़क और वो साथ-साथ ही पैदा हुए थे – इतनी पुरानी। फ़र्क तो इतना कि गन्नो मज़े में उसका फ़ासला तय करती जा रही थी और सड़क बस ठिग कर रह गई थी।"[2]

यह सड़क मूल रूप से गाँव को दशान राजमार्ग से जोड़ने के लिए बनाई गई थी। इसका निर्माण कार्य बीस साल पहले शुरू हुआ था। हालाँकि, बीस साल से भी ज़्यादा समय बीत जाने के बाद भी, यह सड़क अभी भी निर्माणाधीन है और कभी पूरी नहीं हुई है:

"पक्की डमल रोड से इस गाँव को जोड़ने वाली यह सड़क पिछले बीस सालों से बनती आ रही है।"[3]

कहानी में लेखक बार-बार कहता है कि उस सड़क का निर्माण कई सालों से चल रहा है। लेखक सड़क के निर्माण की तुलना गन्नो के जीवन से इस प्रकार करता है:

"गन्नो पैदा हुई और बढ़ती चली गई। यह सड़क भी पैदा हुई और बढ़ती ही चली

1Гирираж Шаран. Грамбья живан. Шрамдан. Дехли, Б.41.

2 Ўша китоб, Б.41

3 Ўша китоб, Б. 41

Сканировано с CamScanner

गई, मगर कभी पूरी नहीं बन पाई। पचासों बार नए जोश-खरोश से काम शुरू हुआ। मिट्टी और गर्द-ओ-गुबार के ढेर से उभरने वाली सड़क हर बार खिसककर किसी मोड़ पर फ़ाइलों और काग़ज़ों के ढेर में गुम होती रही।" [4]

"यही कारण है कि यहाँ इतना अँधेरा है। यह सड़क भी पैदा हुई और बढ़ती चली गई, मगर कभी पूरी नहीं बन पाई। पचासों बार नए जोश-ख़रोश से काम शुरू हुआ। मिट्टी और गर्द-ओ-गुबार के ढेर से उभरने वाली सड़क हर बार खिसककर किसी मोड़ पर फ़ाइलों और काग़ज़ों के ढेर में गुम होती रही।"

निम्नलिखित वाक्य से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि सौंदर्यीकरण कार्य सच्चाई के नाम पर, केवल सरकार से धन लूटने के उद्देश्य से किया जा रहा है:

"सरपंच के गले में मोगरे का गजरा पड़ा। तालियाँ बजीं। कुदाल उठी, कंधे से ऊपर छे–सात एक-दो तीन की लग। गन्नो जैसी पुरानी रेज़ा पीछे रहती भला! वो उस समय दोहरी हुई, टोकरी पकड़े खड़ी थी। फिर दूसरा पोझ टोकरी उठाकर देता सरपंच और ढलके हुए आँचल को समेटे, फिर तीसरी पोझ..." [5]

ऐसा लगता है कि इस आयोजन में अखबार के पत्रकारों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उन्होंने पर्यवेक्षकों और मजदूरों की विभिन्न मुद्राओं में तस्वीरें लीं। अगर वे इन्हें अखबार को समाचार के रूप में देते, तो यह खबर फैल जाती कि गाँव में निर्माण कार्य ठीक चल रहा है। इसके अलावा, वरिष्ठ और कनिष्ठ प्रबंधकों को रिपोर्ट करने के लिए भी इन तस्वीरों की ज़रूरत होती है। एक और उदाहरण:

"आज गजरा, माला, फूल, फ़ोटो, सब होगा। पिछली बार फोटो में वह आई थी, पूरी की पूरी, पेई सरपंच के बाप थे तब। और एक दिन गन्नो को रास्ता चलते वह तसवीर भी दिखाई थी। कमर झुकाए, टोकरी उठाती गन्नो" [6]

इस वाक्य से यह भी पता चलता है कि जब भी सुपरवाइज़र आते थे, पत्रकारों का आना एक परंपरा बन गई थी। यहाँ तक कि नेतृत्व का पद पिता से पुत्र को हस्तांतरित होना और वे वही करते हैं जो उनके पिता करते थे, यह भी साफ़ दर्शाता है कि सड़क निर्माण का काम कितना पुराना है।

मज़दूर भी इसके आदी हो गए हैं। अगर छोटे नेता शामिल हों, तो निरीक्षण तय है।

4 . Ўша китоб, Б. 41

5 वही संग्रह, पृ. 43

6 वही संग्रह, पृ. 44

Сканировано с CamScanner

वे फिर से मीटिंग करते हैं, मालाएँ पहनाई जाती हैं, मिठाई परोसी जाती है, समारोह शुरू होता है और इसके साथ ही लंबे समय के लिए काम रुक जाता है। गन्नो के अपने वरिष्ठ बॉस, सरपंच से कहे गए ये शब्द हमारी राय का प्रमाण हैं:

"मलिक, छोटे सरकार चार साल पहले जब आपके बाप सरपंच थे, तब पहली बार इस सड़क पर "श्रमदान" हुआ था, तभी का है ये लटोरा, उसके बाद दूसरा कल हुआ, "अगला श्रमदान "कब होगा, छोटे सरकार"[7]

या फिर आइये इस वाक्य पर नजर डालें:

"आखिरकर, एक बार पंचायत ने तय ही कर लिया था कि सड़क पूरी बनकर रहेगी। डाले रहो कान में तेल, शर्म आती होगी, पिछली बार श्रमदान हुआ था तो शर्म लिहान में कुछ काम आगे बढ़ा था। ऐसी कि अब भी सड़क पूरी कर दो वरणा और इस वरना का जवाब देने की फुरसत किसे थी, चुनाव सर पर खड़े थे।"[8].

कहानी के आरंभ से अंत तक विभिन्न वाक्यों के पीछे इस तरह का आलोचनी छिपा है।

एक छोटी सी कहानी में लेखक शासन की इस परंपरा की, जो भारतीय समाज में एक अपरिवर्तनीय, कठोर व्यवस्था के रूप में जड़ जमाए बैठी है, हर वाक्य में निंदा करता है और इन छोटी-छोटी छवियों के माध्यम से बिना छिपाए नक़ली नेताओं का असली चेहरा उजागर करता है। हालाँकि, लेखक का मानना है कि यह समस्या समाज में सबसे दर्दनाक बिंदु बनी हुई है, जिसमें कोई सुधार नहीं हुआ है। कहानी की विषयवस्तु में यही संकेत छिपा है।

नकली नेताओं की आलोचना करने वाली एक और कहानी है रामदरश मिश्र की कहानी "सड़क"। रामदरश मिश्र 20वीं सदी के भारतीय लेखकों में से एक हैं।

हमें रामदरश मिश्र के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाई। उनकी कहानी "सड़क", जिसका अभी तक उज़्बेक भाषा में अनुवाद नहीं हुआ है, से हमें लगा कि ग्रामीण समस्याएँ उनकी रचना का हिस्सा हो सकती हैं।

उनकी कहानी "सड़क" को मधुकर सिंह के संग्रह "ग्राम्य जीवन की श्रेष्ठ कहानियाँ" में शामिल किया गया था।

---

7 वही संग्रह, पृ. 44

8 वही संग्रह, पृ. 44

Сканировано с CamScanner

रामदरश मिश्र की कहानी "सड़क" का विषय "श्रमदान" कहानी से बहुत मिलता-जुलता है, जिसका विश्लेषण पहले अध्याय में किया गया था, क्योंकि दोनों कहानियाँ एक ही मुद्दे - सड़क निर्माण - को समर्पित हैं।

हालाँकि, कहानी "सड़क" कहानी "श्रमदान" से इस मायने में भिन्न है कि पहली कहानी एक ऐसी सड़क के बारे में है जिसका निर्माण कार्य शुरू तो हुआ लेकिन 20 वर्षों से पूरा नहीं हुआ।

दूसरी कहानी, "सड़क", एक ऐसी सड़क के बारे में है जो बननी तो थी, लेकिन बरसों के वादों के बावजूद, वह कभी नहीं बनी। यही बेपरवाह और उदासीन नेता इस बात के लिए ज़िम्मेदार हैं कि सड़क का निर्माण शुरू नहीं हुआ है।

कहानी के नायक पांडे के शब्दों से यह बात स्पष्ट होती है कि सड़क का निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ है:

वह कब से सोच रखा था कि काश इस पिछड़ हुए कछार में भी एक सड़क आती। लेकिन सारी की सारी सड़कें तो सोई हुई हैं। सड़कें दुनिया भर में कितनी हैं। लेकिन, अपने जवार में सड़क आने का और उस पर यात्रा करने का सुख कुछ और ही होगा।[9].

इस वाक्य से साफ़ ज़ाहिर होता है कि कहानी का नायक पांडे लंबे समय से सड़क बनने का इंतज़ार कर रहा है। इस वाक्य में लेखक पांडे की सादगी दिखाते हुए, ऐसे मामलों में नेताओं की छिपी राजनीति की ओर भी इशारा करता है:

लेकिन तब उसने कहां सोचा था कि सड़क के आने का और मतलब भी हो सकता है। [10].

लेखक सड़क निर्माण योजना के आधार पर राज्य से धन उगाही करने के नेताओं के लक्ष्य की ओर इशारा कर रहा है। चूँकि सड़क निर्माण योजना स्वीकृत हो चुकी है, धन आवंटित भी हो चुका है, लेकिन निर्माण शुरू होने का नामो निशान नहीं है। इसके अलावा, लेखक का सुझाव है कि वे नकली नेता ग्रामीणों के लिए सड़कें बनाने के बजाय अपनी समस्याओं और अपने जेबों को भरना पसंद करते हैं।

निष्कर्षतः, "श्रमदान" और "सड़क" कहानियों में 20वीं सदी के लेखक गांव में सामाजिक मुद्दों के प्रति नेताओं के ठंडे रवैये का वर्णन करता है, तथा यह तथ्य भी बताता

---

9 Грамья живан ки шрештх каханиян. Рамдараш Мишра. Сарак. – Дилли,1986.-Б. 59

10 Ўша китоб. Б. 59

Сканировано с CamScanner

है कि वे नेता नहीं बल्कि झूठे नेता हैं।

यह तथ्य कि ये फर्जी नेता न केवल अपने गांवों को वास्तव में बेहतर बनाने के इरादे से इस तरह के काम शुरु करते हैं बल्कि उच्च अधिकारियों के सामने अपना असलियत छुपाने तथा केवल अपने फायदे के लिए हर तरह के निर्माण के काम शुरू करते हैं। लेखक लोग भी कहानी में उठाए गए सड़क निर्माण की समस्याओं के माध्यम से स्पष्ट रूप से नक़ली नेताओं का असली चहरा दिखाते हैं, उनका कड़ी रूप से आलोचना करके हैं।

आशा है कि आज, 21वीं सदी में इस तरह के नेता भारतीय समाज में नहीं मिलेंगे। और उलटा आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी की गाँव की उन्नति से संबंध नीति से भारत के गाँवों में काफी उन्नति की हवा उड़ने लगीं।

सहायक सूची:

1. गिरिराज शरण, ग्राम्य जीवन की चुनींदी कहानियाँ। दिल्ली, 1986.
2. विश्वंभर दयाल गुप्ता, ग्रामीण समाज शास्त्रः साहित्य परिप्रेक्ष्य में, आगरा, 1980.
3. रामदरश मिश्र. ग्राम्य जीवन की श्रेष्ठ कहानियाँ, सड़क, दिल्ली, 1986.
4. मधुकर सिंह, ग्राम्य जीवन की श्रेष्ठ कहानियाँ, दिल्ली, 1980.

उल्फत मुखीबोवा
ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय का प्रोफेसर
महात्मा गांधी भारतविद्या केन्द्र का निदेशक
ईमाइलः ulfatmuhib8@mail..ru
फोनः, whatsap: +998 95 644 30 37

डॉ. खोदजायेवा नीलूफर
दक्षिण एशियाई भाषा और साहित्य विभागाध्यक्ष
ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरियंटल स्टडीज

Сканировано с CamScanner